‘‘सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों का योगदान’’

"Sufi Sangeet ke Prachaar Prasaar me Punjab ke Kalakaron ka Yogdan"

(SYNOPSIS)

(विषय–संक्षेप)

फेकल्टी ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स

द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा

पीएच.डी. (संगीत गायन) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–सार

शोधकर्ता | शोध निर्देशक **(Guide)**

जगदीप सिंह | डॉ. अश्विनी कुमार सिंह

सत्यं शिवं सुन्दरम्

Estd. 1949

भारतीय शास्त्रीय संगीत (गायन) विभाग,

द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा

वर्ष : 2016–2021

Registration Date : 23/06/2016

Registration No.: FOPA/56

परिचय

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक आध्यात्मिक उन्नति के लिए हर एक वर्ग में धार्मिक चेतना मानव जाति का विशेष अंग रही है और मानव जाति के जीवन निर्वाह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। धार्मिक चेतना ने ही जीवन को अच्छे ढंग से व्यतीत करने के लिए, मानव को अमानवीय कार्यों से रोकने के लिए हमेशा से प्रेरित किया है।आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रत्येक धर्म या संप्रदाय कुछ नियमों को निर्धारित करता है जिनकी पालना करना हर व्यक्ति के लिए जरूरी होता है ।परंतु धार्मिक प्रवक्ताओं द्वारा अपनी कट्टर सोच अनुसार जब किसी नियम को जबरदस्ती सरकार करवाने के लिए प्रयत्न रहते हैं तो उसका विरोध हर देश या जाति में शुरू से होता आ रहा है। इसी तरह मुसलमान सूफी फकीर भी शरीयत के कट्टर नियमों से नाखुश थे। क्योंकि जिस इलाही भेद की बात कुरान में अंकित है उसी बात को समझते हुए सूफी फकीरों द्वारा बाहरी दिखावे के विपरीत वास्तविक सच्चाई को अपनाकर आंतरिक रहस्यों द्वारा उस अल्लाह, ईश्वर की इबादत को ही अपने जीवन में लक्ष्य मानकर अग्रसर होना ही इन सूफी फकीरों का जीवन सार था। इसके अतिरिक्त सूफी परंपरा का उद्भव उसी समय से मान लेना उचित होगा जब किसी व्यक्ति विशेष को जो शरीयत के बंधनों से मुक्त होकर ईश्वर, अल्लाह के ध्यान में मस्त रहने वाले को सूफी नाम से संबोधित किया गया होगा। सूफी परंपरा के अधीन सूफी फकीरों ने उस अल्लाह, ईश्वर की सच्ची इबादत के लिए संगीत या महफिल–ए–समाअ को माध्यम बनाकर ईश्वर की इबादत आरंभ की। इश्क के संकल्प को अपने व्यवहारिक जीवन का मुख्य अंग सवीकार कर अपने काव्य के माध्यम द्वारा उस परम सत्य ईश्वर, अल्लाह के प्रति अपने प्रेम का इज़हार इश्क–हकीकी द्वारा प्रकट

किया। कालांतर से धीरे–धीरे वही काव्य–संगीत का आधार पाकर सूफी संगीत या सूफियाना संगीत का रूप धारण कर भारतीय संगीत का विलक्षण अंग बन गया।

पंजाब क्षेत्र भारत देश के विभिन्न क्षेत्रों की भांति ऐसा क्षेत्र है जिसके जनजीवन में व्यक्ति के जन्म से अंत तक संगीत का अटूट संबंध रहता है। जहाँ पंजाब क्षेत्र में भारतीय संगीत की विभिन्न विधाओं के अंतर्गत शास्त्रीय, अर्द्ध–शास्त्रीय और सुगम संगीत प्रचलित है। वहीं धार्मिक या भक्ति संगीत धारा के अंतर्गत भजन संगीत की भांति गुरमत संगीत और सूफियाना संगीत का पंजाब क्षेत्र में प्रचलन इस क्षेत्र के जनमानस का अध्यात्मिक संगीत प्रति लगाव का प्रमाण है। पंजाब की संगीत परंपरा में धार्मिक संगीत के अंतर्गत जहां भजन संगीत साधारण जनमानस को दिशा प्रदान करता है। वहीं पंजाब की संगीत–परंपरा में गुरमत संगीत शब्द प्रधान गायन होने के फलस्वरुप मानवता को उच्चतम जीवन निर्वाह करने के साथ–साथ जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ने को प्रेरित करता है। जो पंजाब की संगीत परंपरा में गुरमत संगीत गायन शैली के रूप में लोकप्रिय एवं विश्व प्रसिद्ध है। इसी की भांति सूफी परंपरा के अधीन सूफियाना गायन जनमानस को जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत करवाने के साथ–साथ उस ईश्वर अल्लाह की इबादत के लिए इश्क मिजाज़ी से इश्क हकीकी की ओर अग्रसर करता है। सूफियाना गायन पंजाब की संगीत परंपरा का अभिन्न अंग है। जिसमें शास्त्रीय, अर्द्ध–शास्त्रीय और लोक संगीत के तत्वों का समावेश मिलता है। सूफी फकीरों द्वारा रचित वाणी सूफियाना गायन के रूप में लोकप्रिय है। सूफियाना गायन को प्रचारित व प्रसारित करने में पंजाब के कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान

है। जिसके परिणाम स्वरूप सूफियाना गायन वर्तमान में लोकप्रियता एवं विश्व प्रसिद्धि हासिल किए हुए हैं।

विषय चयन :

मनुष्य को परमात्मा ने संगीत के बेशकीमती उपहार के साथ निवाज़ा है। संगीत एक परिवर्तनशील कला है जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक संगीत के अलग–अलग रूपों में मानवीय भावों द्वारा आनंद की अनुभूति करवाता है। शोधार्थी को शुरू से ही संगीत प्रति लगाव होने के कारण पंजाब की संगीत परंपरा में प्रचलित भिन्न–भिन्न गायन शैलीयों ने बहुत प्रभावित किया। जिसके फलस्वरुप सूफी परंपरा के अधीन सूफियाना गायन को प्रस्तुत करने वाले गायक कलाकारों के प्रति झुकाव बढ़ता गया। जिसके लिए शोधार्थी ने अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए पंजाब के गायक कलाकारों का सूफियाना गायन के प्रति समर्पण को ध्यान में रखते हुए। सूफी संगीत या सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों के योगदान को शोध प्रबंध के विषय के लिए चयन किया गया।

उद्देश्य

- पंजाब की संगीत परंपरा के अंतर्गत विभिन्न विधाओं को प्रस्तुत करना
- सूफियाना गायकी का पंजाब की संगीत परंपरा में स्थान को प्रस्तुत करना।
- सूफियाना गायकी के उद्‌भव एवं विकास संबंधी तथ्यों को एकत्रित करना।
- सूफी परंपरा के अंतर्गत पंजाब के प्रसिद्ध सूफी फकीरों के जीवन परिचय को प्रस्तुत करना।

- सूफी परंपरा के अंतर्गत सूफियाना गायन के रूप में प्रचलित काव्य एवं गायन शैलियों को प्रस्तुत करना।
- सूफियाना गायकी के प्रचार– प्रसार हेतु माध्यमों को स्पष्ट करना।
- सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में विभिन्न संगीतक विधाओं के कलाकारों द्वारा दिए गए योगदान संबंधित तथ्य को प्रस्तुत करना ।
- सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार हेतु युवा कलाकारों का सूफियाना गायकी की तरफ रुझान को प्रस्तुत करना ।
- विभिन्न संगीतक विद्वानों का सूफियाना गायन प्रति दृष्टिकोण एवं योगदान को प्रस्तुत करना।
- सूफियाना गायन की परंपरागत विरासत को भविष्य में प्रवाहित रखने संबंधी प्रसिद्ध गायक कलाकारों व संगीतक गुणीजनों के विचारों एवं सुझावों को प्रस्तुत करना।

शोध प्रबंध के विषय संबंधी हुए कार्य का अवलोकन :

किसी भी शोध प्रबंध के अधीन अनुसंधान करने से पूर्व शोध प्रबंध संबंधित पूर्व हो चुके शोध कार्य का अवलोकन करना अनिवार्य होता है ताकि भविष्य में शोध संबंधी पुनरावृत्ति होने की संभावना ना रहे और नवीन तथ्य को एकत्रित किया जा सके ताकि आने वाले विद्यार्थियों और शोधार्थियों को इस विषय संबंधी नई दिशाएं मिल सके। पंजाब के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध कार्य से संबंधित अवलोकन करने पर इस विषय से संबंधित कोई भी कार्य नहीं किया गया। जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों का योगदान वर्तमान के संदर्भ में एक नवीन एवं मौलिक रचना है।

दत्त संग्रह विधि

प्रस्तुत शोध प्रबंध में सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में योगदान संबंधित तथ्यों को एकत्रित करने हेतु वर्णनात्मक के साथ–साथ सर्वेक्षक विधि का प्रयोग किया गया है।

दत्त स्त्रोत एवं उपकरण

प्रस्तुत शोध प्रबंध में दत्त संग्रह करने के लिए पंजाब के प्रसिद्ध कलाकारों अथवा संगीतक गुरुजनों से साक्षात्कार, दूरभाष वार्ता अथवा इंटरनेट आदि का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त शोध कार्य से संबंधित ग्रंथों, पुस्तकों इत्यादि का भी प्रयोग किया गया है।

सीमांकरण

भारतीय संगीत में सूफियाना गायकी का विलक्षण स्थान है। सूफियाना गायन ऐसी इबादत भरी गायकी है जिसे हर क्षेत्र के कलाकारों ने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में शामिल कर प्रचारित एवं प्रसारित किया। परंतु शोध कार्य का विष्य सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों का योगदान (वर्तमान के संदर्भ में) से संबंधित है जिसके अंतर्गत हिंदुस्तानी पंजाब के गायक कलाकारों के सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में योगदान का वर्णन किया गया है।

शोध कार्य की रूपरेखा

सूफी संगीत की लोकप्रियता एवं विश्व ख्याति के अंतर्गत वर्तमान पंजाब के कलाकारों के योगदान को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा शोध प्रबंध ''सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों का योगदान'' विषय को छः अध्यायों में बाँटा गया है जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

प्रथम अध्याय **'पंजाब की संगीत परम्परा : परिचयात्मक अध्ययन'** में पंजाब के शाब्दिक अर्थ, पंजाब की भूगौलिक स्थिति, पंजाब की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पंजाब के संगीत का इतिहास, पंजाब प्रदेश की रियासतों एवं घराना परम्परा, पंजाब के संगीत की विभिन्न सांगीतिक धाराएँ, भक्ति संगीत आधारित विभिन्न विधाओं का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में **'सूफी संगीत : उद्भव एवं विकास'** पर प्रकाश डाला गया है जिसके अन्तर्गत सूफी शब्द का अर्थ, सूफी मत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भारत में सूफियों का आरम्भ, पंजाब में सूफी परम्परा का आरम्भ, सूफी सिलसिले या सम्प्रदाओं का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय **प्रमुख सूफी फकीर एवं सूफियाना गायन शैलियों** पर आधारित है जिसमें प्रमुख सूफी फकीरों के बारे में बात करते हुए पंजाब के प्रमुख सूफी फकीरों के जीवन परिचय के बारे में जानकारी दी गई है और इन सूफी फकीरों द्वारा रचित रचनाओं से उत्पन्न हुई विभिन्न सूफी संगीत की शैलियों का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय **'सूफी संगीत के प्रचार हेतु माध्यम'** में दरगाहों के शाब्दिक अर्थ, पंजाब की प्रसिद्ध दरगाहों का विवरण, ग्रामीण सभ्याचारक मेले व निजी महफिलों, शिक्षण संस्थाओं, गैर–शिक्षण संस्थाओं का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय **'सूफीयाना गायकी के प्रचार प्रसार में विभिन्न विधाओं के कलाकारों का योगदान'** में सूफीयाना गायन के अन्तर्गत प्रसिद्ध कलाकरों का जीवन परिचय व उनसे भेंटवार्ताएं, महिला कलाकारों का योगदान एवं सूफियाना गायन के अन्तर्गत सूफी ढाडी कलाकारों के योगदान का वर्णन किया गया है। इसी की भांति पंजाब के प्रसिद्ध

कलाकारों से शोध कार्य सम्बन्धित किए गए साक्षात्कारों का वर्णन भी शामिल किया गया है।

छष्ठम अध्याय **'संगीतक विद्वानों का सूफियाना गायन प्रति दृष्टिकोण एवं योगदान'** में सूफियाना गायन के अन्तर्गत संगीतक गुणीजनों से की गई भेंटवार्ता को प्रस्तुत किया गया है और प्रसिद्ध सूफी कलामों का वर्णन किया गया है जिसको विभिन्न कलाकारों ने अपनी गायकी अनुसार निभाया है, इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध सूफी कलामों की स्वरलिपियाँ चाहे वह मुद्रित रूप से प्राप्त की गई हों चाहे शोधार्थी द्वारा स्वयं बनाकर, प्रसिद्ध सूफी कलामों की लोकप्रियता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

'अध्ययन का सारांश एवं निष्कर्ष' को प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात **शोध सम्बन्धी भावी सम्भावनाओं** को प्रस्तुत करते हुए अगले शोधार्थियों के लिए शोध सम्बन्धी कई विषय रखने का प्रयास किया गया है।

अन्त में परिशिष्ट 1 (प्रश्नावली), परिशिष्ट 2 (साक्षात्कार सूची), परिशिष्ट आदि को दर्शा कर अंत में संदर्भ ग्रन्थ सूची का संलग्न किया गया है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

हिन्दी पुस्तकें :

अरोड़ा, ए.सी., पंजाब का इतिहास, प्रदीप पब्लिकेशन्स, जालन्धर, 1992

गोस्वामी, सुनील (डॉ.), सूफी संगीत राग परम्परा के सन्दर्भ में, अंकित पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010

ठाकुर, जैदेव सिंह, भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय, प्रकाशन चौंक, वाराणसी, 1994

तिवारी, राम पूजन, सूफीमत और हिन्दी साहित्य, ज्ञान मण्डल वाराणसी, 1980

जैन, विमल कुमार (डॉ.), सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पीयूश प्रकाशन, दिल्ली

नरेश (डॉ.), सूफीमत और हिन्दी–कावि, शब्द सृष्ट प्रकाशन, दिल्ली, 2007

पाण्डे, आशा (डॉ.), मध्यकालीन संगीत शैलियों का उद्‌गम और विकास, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1994

पैंतल, गीता (डॉ.), पंजाब की संगीत परम्परा, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1988

बावरा, जोगिन्दर सिंह, भारतीय संगीत का इतिहास, ए.बी.एस. पब्लिकेशन्स, जालन्धर

बृहस्पति, आचार्य, संगीत चिन्तामणि, संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश

बृहस्पति, आचार्य, प्राचीन भारत में संगीत, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 1967

बृहस्पति, आचार्य, मुसलमान और भारतीय संगीत, राजकंवल प्रकाशन, नई दिल्ली

बावरा, जोगिन्दर सिंह, भारतीय संगीत उत्पत्ति एवं विकास, ए.बी.एस. पब्लिकेशन्स, जालन्धर, प्रथम संस्करण, 1994

बैनर्जी, नमिता (डॉ.), मध्यकालीन संगीतज्ञ एवं उनका तत्कालीन समाज पर प्रभाव, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1996

मदान, पन्ना लाल, संगीत अध्यापन, पंजाब किताब घर, जालन्धर, 1965

शर्मा, भगवत शरण, भारतीय संगीत का इतिहास, संगीत कार्यालय प्रकाशन, हाथरस, उत्तर प्रदेश, 2010

जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोज़ाबाद, आगरा, 1969

यमन, अशोक कुमार, संगीत रत्नावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चण्डीगढ़, 2008

पंजाबी पुस्तकें :

अमोल, ऐस.ऐस., बाबा फरीद : जीवन ते रचना, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2002

अमोल, ऐस.ऐस. (संपा.), सुलतान बाहू, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, 1970

आनन्द, तरलोक सिंह, हरजोत कौर (संपा.), सुल्तान बाहू दी चौणवीं कविता, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला,, 2003

सुहरावर्दी, शेख शहाब–उद–दीन, अवारिफ–उल–मुआरिफ, (अनु.) गुलवंत सिंह, पंचनद साहित्य प्रतिष्ठान, लुधियाना, 1963

सीतल, जीत सिंह, सूफीमत ते कविता, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, 2002

सुखदेव सिंह (डॉ.), पंजाबी सूफी कवि, लोकगीत प्रकाशन, चण्डीगढ़, 2008

सुरिंदर सिंह (डॉ.), चौणवियां काफियां, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, 1993

हबीब, मोहम्मद (डॉ.), भारत विच्च सूफीवाद : चौणवें सन्दर्भ, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2009

हबीब, मोहम्मद (डॉ.), साईं मियां मीर (जीवन साधना अते सिख्यावां), पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2005

हबीब, मोहम्मद (डॉ.), इस्लाम संखेप सर्वेखण, ग्रेशियस बुक्स, नई दिल्ली, 2011

कंग, गुलज़ार सिंह, सूफीमत सिलसिले ते साधक, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, 2002

खालसा, इन्द्रजीत सिंह, बाबा फरीद (शकरगंज) अते फरीदकोट, बाबा फरीद सोसायटी, फरोदकोट, 2012

गुरदेव सिंह (डॉ.), पंजाबी सूफी कावि दा इतिहास, पंजाबी अकादमी, दिल्ली, 2005

गुरदेव सिंह (डॉ.), सूफी जीवनियां, लोकगीत प्रकाशन, 2002

गुरनाम सिंह (डॉ.), पंजाबी संगीतकार, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1989

गुरनाम सिंह (डॉ.), पंजाबी भाषाई शास्त्री गायन बंदिशां, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1999

गुलवंत सिंह, इस्लाम अते सूफीवाद, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2004

गुलवंत सिंह, सूफीवाद, लोकगीत प्रकाशन, चण्डीगढ़, 1997

गुरमुख सिंह (डॉ.), प्रोफैसर गुलवंत सिंह रचनावली, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2006